International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

स्वच्छता संबंधी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ: एक विमर्श

डॉ. के ारी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

स्वच्छता तक पहुंच बुनियादी ढांचे से जुड़ी समस्या नहीं है बल्कि इसमें अधिक गहरा व्यवहार संबंधी एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ काम करता है। 60 करोड़ लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना ऐसी चुनौती है, जिसका बीड़ा संभवतः दुनिया में कभी किसी ने नहीं उठाया है। इसे सघन, समयबद्ध हस्तक्षेप से ही हासिल किया जा सकता है, जिसे सर्वोच्च–स्तर से चलाया जाए और जिसमें समाज के सभी वर्ग और सरकार भाामिल हों। कहते हैं, जिसका समय आ गया है उसे कोई रोक नहीं सकता! रक्तरंजित वि वयुद्ध के बाद जब हिंसा का बोलबाला था, उस समय भारत ने अहिंसक सविनय अवज्ञा के जरिए, सत्याग्रह के जरिए आज़ादी हासिल की। पूरा दे ा महात्मा गांधी की आवाज़ के पीछे चल पड़ा और भारत ने दुनिया के सामने उदाहरण स्थापित करते हुए आज़ादी हासिल की। वह एक विचार था, जिसका समय आ चुका था। इसी तरह जब दे ा सबसे ज्यादा खुले में भौच करने वाले दे ाों की कुख्यात सूची में बहुत ऊपर है, उस समय 02 अक्टूबर, 2019 तक सभी जगह सफाई के साथ स्वच्छ भारत की प्रधानमंत्री की अपील एक ऐसा विचार है, जिसका समय आ चुका है।

खुले में भौच मानव सभ्यता के आरंभ से ही जारी है। भारत में सदियों तक यह लाखों लोगों की जीवन ौली का हिस्सा रहा है। एक के बाद एक सरकारें 1980 के द ाक से ही राश्ट्रीय स्वच्छता कार्यक्रम चलाती आ रही है, लेकिन 2014 तक केवल 39 प्रति ात लोगों को सुरक्षित स्वच्छता सुविधाएं हासिल हो सकी थीं। इसका कारण यह है कि स्वच्छता तक पहुंच बुनियादी ढांचे से जुड़ी समस्या नहीं है बल्कि इसमें अधिक गहरा व्यवहार संबंधी एवं सामाजिक–सांस्कृति संदर्भ काम करता है। 60 करोड़ लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना ऐसी चुनौती है, जिसका बीड़ा संभवतः दुनिया में कभी किसी ने नहीं

उठाया है। इसे सघन, समयबद्ध हस्तक्षेप से ही हासिल किया जा सकता है, जिसे सर्वोच्च स्तर से चलाया जाये और जिसमें समाज के सभी वर्ग और सरकार भाामिल हों। स्वच्छ भारत मि ान के स्वच्छाग्रह ने राश्ट्र को बिल्कुल उसी तरह प्रभावित किया है, जैसा कई वर्श पहले महात्मा के सत्याग्रह ने किया था।

स्वच्छता का महत्व तो प्रमाणित है क्योंकि अतिसार जैसे रोगों से होने वाली ि ा ु मृत्यु और महिलाओं की सुरक्षा तथा गरिमा इसके प्रभाव सर्वविदित हैं। किंतु स्वच्छता की कमी की जो कीमत हमें नजर आती है, उससे कहीं बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। वि व बैंक के एक अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि स्वच्छता नहीं होने के कारण ही भारत के लगभग 40 प्रति ात बच्चे भाारीरिक एवं मानसिक रूप से कम विकसित हैं। हमारी भावी श्रम ाक्ति के इतने बड़े हिस्से का अपनी पूरी क्षमता से काम नहीं कर पाना हमारी सबसे बड़ी ताकत– हमारे जनांकिक लाभां ा– के लिए गंभीर खतरा है। इस समस्या का समाधान ही हमारे विकास संबंधी एजेंडा के केन्द्र में है और वैि वक आर्थिक महा ाक्ति बनने की हमारी क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है। वि व बैंक का यह अनुमान भी है कि स्वच्छता की कमी के कारण भारत को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 06 प्रति ात से भी अधिक का नुकसान होता है।

स्वच्छता के आर्थिक प्रभाव पर यूनिसेफ के हालिया अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि खुले में भाौच से मुक्त गांव में प्रत्येक परिवार चिकित्सा के खर्च, समय और जीवन की रक्षा के लिहाज से हर वर्श 50,000 रूपये बेचा जाता है। इसके अलावा अच्छे ठोस तथा तरल संसाधन प्रबंधन के जरिए कचरे से संपत्ति तैयार करने की अकूत संभावना भी है। अध्ययन में निश्कर्श दिया गया है कि 10 वर्शों में स्वच्छता से हरेक परिवार को उस पर हुए कुल निवे ा (सरकारी व्यय और घरेलू योगदान समेत खर्च के अन्य साधन) से 4.7 गुना आर्थिक लाभ हो जाते हैं। इससे स्वच्छता की सुविधाएं बढ़ाने में निवे ा की दलील को स्पश्ट रूप से काफी बल मिलता है।

स्वच्छ भारत मि ान के पास केन्द्र तथा राज्य सरकारों से पांच वर्श में 20 अरब डॉलर से अधिक का बजट है। निजी क्षेत्र, विकास एजेंसियों, धर्म या आस्था से संबंधित संस्थाओं एव नागरिकों से अतिरिक्त निवे ा भी आ रहा है। स्वच्छ भारत कोश में पहले ही कुछ वि ोश

स्वच्छता परियोजनाओं के लिए 660 करोड़ रूपये एकत्र एवं जारी किये जा चुके हैं। यह धनरा ि ा व्यक्तियों, कंपनियों एवं संस्थाओं के निजी योगदान के जरिए इकट्ठी की गई है और सबसे अधिक 100 करोड़ रूपये का योगदान धर्मगुरू माता अमृतानंदमयी से मिला है! ढेरों निजी कंपनियों ने अपेन सीएसआर कोश से वि ोश रूप से स्कूलों में स्वच्छता के लिए काम किया है। लेकिन स्वच्छ भारत मि ान के लिए निजी क्षेत्र की रचनात्मकता तथा नवाचार का फायदा उठाने की अभी बहुत संभावना बाकी है। भारत सरकार के सभी मंत्रालय और विभाग अपने–अपने क्षेत्रों में स्वच्छता को मुख्यधारा में लाने का प्रयास कर रहे हैं और उन्होंने सफाई तथा स्वच्छता के लिए अलग से बजट भी रखा है, जो वित्त वर्श 2017–18 के लिए कुल मिलाकर 12,000 करोड़ रूपये से भी अधिक है।

स्वच्छ भारत मि ान तेजी से जनांदोलन बनता जा रहा है। भारत में खुले में भौच करने वाले लोगों की संख्या घटाकर 30 करोड़ के करीब लाने में यह पहले ही सफल हो चुका है और अब 68 प्रति ात से भी अधिक भारतीयों को स्वच्छता के सुरक्षित साधन उपलब्ध हैं। लेकिन अभी लंबा रास्ता तय करना है। इसकी रफ्तार और बढ़ाने के लिए सरकार ने 15 सितंबर से 02 अक्टूबर, 2017 के बीच स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा आरंभ किया है। इस पखवाड़े के दौरान समाज के सभी वर्ग–मंत्रालय, सांसद, केंन्द्र एवं राज्य सरकार के अधिकारी, चर्चित हस्तियां, संगठन, कंपनियां, स्थानीय नेता एवं नागरिक–श्रमदान कर स्वयं को स्वच्छता के प्रति समर्पित करेंगे। और इस तरह स्वच्छ भारत मि ान की ऊर्जा दूर–दूर तक फैल जाऐगी।

समय आ गया है कि सभी कमर कस लें और स्वच्छ भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं, ऐसे भारत के निर्माण में, जिसका सपना महात्मा ने देखा था। यदि आप यह पढ़ रहे हैं तो आगे बढ़े और अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएं।

References

Elizabeth Shove, Comfort, Cleanliness, and Convenience: The Social Organization of Normality (Berg, 2003), p. 80.

Kathleen M. Brown, Foul Bodies: Cleanliness in Early America (Yale University Press, 2009), p. 327

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

Warsh, Cheryl Krasnick (2006). Children's Health Issues in Historical Perspective. Veronica Strong-Boag. Wilfrid Laurier Univ. Press. p. 315. ISBN 9780889209121

Thurlkill, Mary (2016). Sacred Scents in Early Christianity and Islam: Studies in Body and Religion. Rowman & Littlefield. p. 6–11. ISBN 0739174533.

Squatriti, Paolo (2002). Water and Society in Early Medieval Italy, AD 400-1000, Parti 400-1000. Cambridge University Press. p. 54. ISBN 9780521522069

C. Y. Chang and Francis Kai, GaAs High Speed Devices: Physics, Technology, and Circuit Applications (John Wiley, 1994), p. 116.

Wisniewski, Karen (2007). "All-Purpose Cleaners and their Formulation". In Tsoler, Uri. Handbook of detergents